National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2017; 1(13): 106-108
© 2017 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भारतीय ज्योतिष का स्वरूप और महत्व

डॉ सुरेश कुमार

भारतीय ज्योतिष, जिसे वैदिक ज्योतिष या ज्योतिषशास्त्र के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन एवं सुव्यवस्थित ज्ञान-विज्ञान की परंपरा है। यह केवल भविष्यवाणी का साधन मात्र नहीं, बल्कि एक समग्र दर्शन है जो ब्रह्मांड और मानव जीवन के बीच गहन सम्बन्ध को प्रतिपादित करता है। पाश्चात्य ज्योतिष (एस्ट्रोलॉजी) से भिन्न, भारतीय ज्योतिष की अपनी एक स्वतंत्र व सैद्धांतिक आधारशिला है, जो सृष्टि के नियमों, कर्म-सिद्धांत और आत्मा के विकास में गहन आस्था रखती है। यह 'ज्योतिष' शब्द स्वयं 'ज्योति' अर्थात प्रकाश से व्युत्पन्न है, जो ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान के अंधकार को मिटाने का संकेत देता है।

भारतीय ज्योतिष का स्वरूप : एक समग्र दृष्टिकोण

भारतीय ज्योतिष के स्वरूप को समझने के लिए इसे केवल ग्रह-नक्षत्रों का अध्ययन मात्र नहीं समझना चाहिए। इसका स्वरूप अत्यंत विशाल एवं बहुआयामी है। यह वेदों का अंग है। षड्वेदांगों में से एक है। भारतीय परंपरा में ज्योतिष को वेदों का नेत्र माना गया है। वेदों के छह अंगों शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष में से एक होने के कारण इसका महत्व और प्रामाणिकता स्वयं सिद्ध है।

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्द एव च।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडेव तु॥[1]

यह वैदिक कर्मकांडों के समय निर्धारण, शुभ मुहूर्त के चयन आदि के लिए अनिवार्य था।

"यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद्वद्वेदाङ्गशास्त्राणां, ज्योतिषं मूर्ध्नि स्थितम्॥[2]"

जिस प्रकार मोरों में शिखा (सिर का पंख) और सर्पों में मणि का स्थान श्रेष्ठ है, उसी प्रकार समस्त वेदांग शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र का स्थान सर्वोपरि (मूर्धन्य) है।

इस श्लोक से स्पष्ट है कि प्राचीन ऋषियों ने ज्योतिष को कितना उच्च स्थान दिया था।

त्रिस्कंध : ज्योतिष के तीन प्रमुख अंग

परंपरागत रूप से ज्योतिषशास्त्र के तीन प्रमुख अंग या शाखाएँ बताई गई हैं :

स्कंध : गणित (गणितीय ज्योतिष) – इसमें ग्रहों, नक्षत्रों की गति, स्थिति, ग्रहण, ग्रहों के उदय और अस्त आदि की गणितीय गणनाएँ की जाती हैं। खगोल विज्ञान का यही आधार है।

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्॥[3]

जैसे मोर के सिर पर शिखा और सर्प के सिर पर मणि का विशेष स्थान होता है, उसी प्रकार वेदों के सभी अंगों में ज्योतिष (विशेषतः गणितीय ज्योतिष) सर्वोच्च स्थान रखता है, क्योंकि यह समय-निर्धारण (तिथि, नक्षत्र, मुहूर्त) का आधार है।

स्कंध : होरा (फलित ज्योतिष) – इसके अंतर्गत ग्रहों की स्थिति के आधार पर मनुष्य के जीवन, भाग्य, शुभ-अशुभ घटनाओं आदि का विश्लेषण किया जाता है। जन्म कुंडली, दशा-अंतर्दशा, गोचर आदि इसी के अंग हैं।

ग्रहा राशयश्च भावाश्च योगाश्चैव विशेषतः।
तेषां फलप्रदं शास्त्रं होराशास्त्रं प्रचक्षते॥[4]"

स्कंध : संहिता (सामूहिक ज्योतिष) – इस शाखा में राष्ट्र, समाज, प्रकृति से जुड़ी घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है। जैसे – भूकंप, बाढ़, अकाल, युद्ध, चुनाव परिणाम आदि। इसमें ज्योतिष के साथ-साथ शकुन-अपशकुन आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

वेदाः हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ता
कालानुपूर्वा विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं
यो ज्योतिषं वेद स वेदयज्ञम्॥[5]

इस त्रि-विभाजन से स्पष्ट है कि ज्योतिष का दायरा व्यक्तिगत जीवन से लेकर समस्त ब्रह्मांड तक फैला हुआ है।

3. कर्म-सिद्धांत से अविभाज्य सम्बन्ध

भारतीय ज्योतिष की सबसे बड़ी विशेषता इसका कर्म-सिद्धांत से गहरा जुड़ाव है। ज्योतिष मानता है कि ग्रह हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के फलदाता हैं। वे हमें कर्मानुसार सुख-दुःख देने वाले दूत मात्र हैं, नियति के निर्माता नहीं। ग्रहों की स्थिति हमारे पूर्व संचित कर्मों का एक 'कॉस्मिक ब्लूप्रिंट' या ब्रह्मांडीय आलेख प्रस्तुत करती है।

"नादत्ते कस्यचित् पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः॥"[6]

महर्षि पराशर के अनुसार जीवात्मा अपने कर्मों का फल भोगता है, जो शुभ या अशुभ ग्रहों के माध्यम से उसे प्राप्त होता है, और यह सब उसके अपने कर्मों के अनुसार ही होता है।

अतः ज्योतिष का उद्देश्य भाग्यवादिता को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि व्यक्ति को उसके शुभ-अशुभ कर्मों के प्रति जागरूक करना और उचित मार्गदर्शन द्वारा कठिनाइयों को कम करने में सहायता करना है।

4. एक विज्ञान और एक कला का समन्वय

ज्योतिष एक विज्ञान इसलिए है क्योंकि इसके अपने निश्चित सिद्धांत, नियम और गणितीय आधार हैं। ग्रहों की स्थिति और गति का अध्ययन पूर्णतः वैज्ञानिक है। साथ ही, यह एक कला भी है, क्योंकि एक ज्योतिषी ग्रहों के संयोजन, दशाओं और योगों का विश्लेषण करते समय अपने अनुभव, अंतर्दृष्टि और सूक्ष्म अवलोकन का प्रयोग करता है। दो एक जैसी कुंडलियों के फलादेश में थोड़ा अंतर इसी कलात्मक पहलू के कारण हो सकता है।

भारतीय ज्योतिष का महत्व

भारतीय ज्योतिष का महत्व केवल भविष्य जानने तक सीमित नहीं है। इसका मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर गहरा प्रभाव एवं उपयोगिता है।

1. आत्म-ज्ञान और आत्म-विकास का साधन

कुंडली व्यक्ति के स्वभाव, गुण-दोष, प्रतिभा और मानसिक प्रवृत्तियों का एक दर्पण है। यह व्यक्ति को स्वयं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी की कुंडली में मंगल अशुभ स्थिति में है, तो उसे क्रोध पर नियंत्रण रखने का सुझाव दिया जा सकता है। इस प्रकार, ज्योतिष व्यक्तित्व विकास और आत्म-सुधार का एक शक्तिशाली मार्गदर्शक बन जाता है।

2. कर्म की दिशा निर्धारित करना

ज्योतिष व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि उसके लिए कौन-सा कार्य-क्षेत्र, व्यवसाय या शैक्षिक दिशा अधिक अनुकूल रहेगी। कुंडली में दशम भाव (कर्म-स्थान) और उसके स्वामी का विश्लेषण करके व्यक्ति को उसके करियर के बारे में सार्थक मार्गदर्शन दिया जा सकता है। इससे व्यक्ति समय और ऊर्जा की बचत कर सफलता की ओर अग्रसर हो सकता है।

3. समय का सदुपयोग: दशा और गोचर

भारतीय ज्योतिष की सबसे शक्तिशाली अवधारणाओं में से एक है 'दशा' प्रणाली। यह हमें जीवन के विभिन्न चरणों में आने वाले उतार-चढ़ाव के समय के बारे में बताती है। यदि कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना हो, जैसे व्यवसाय शुरू करना, विवाह करना या घर खरीदना, तो शुभ मुहूर्त (समय का चयन) का महत्व और भी बढ़ जाता है।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।"[7]"

देश (स्थान), काल (समय) और पात्र (व्यक्ति) इन तीनों का सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद ही किसी कार्य को करना चाहिए। यह सनातन विधि (नियम) है।

गोचर के माध्यम से वर्तमान समय में चल रही ग्रहों की ऊर्जाओं का विश्लेषण करके, हम चुनौतियों के लिए तैयार रह सकते हैं और अवसरों का लाभ उठा सकते हैं।

4. स्वास्थ्य और आयुर्वेद के साथ सम्बन्ध

ज्योतिष और आयुर्वेद एक-दूसरे के पूरक हैं। कुंडली के विभिन्न भाव और ग्रह शरीर के विभिन्न अंगों और रोगों के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं। उदाहरण के लिए, सूर्य हृदय और आँखों का, चन्द्रमा मन और रक्त का, और शनि हड्डियों और जोड़ों का कारक है। एक ज्योतिषी व्यक्ति की प्रकृति (वात, पित्त, कफ) और भविष्य में होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं का अनुमान लगाकर निवारक उपाय सुझा सकता है।

5. सम्बन्धों के सामंजस्य में सहायक

विवाह और अन्य साझेदारियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए कुंडली मिलान (मैचिंग) की प्राचीन परंपरा भारतीय ज्योतिष की एक महत्वपूर्ण देन है। गुण मिलान के माध्यम से दो व्यक्तियों की मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक अनुकूलता का आकलन किया जाता है। यह दाम्पत्य जीवन में आने वाली संभावित कठिनाइयों को पहले ही समझकर उनके निवारण का मार्ग प्रशस्त करता है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥[8]

पारस्परिक एकता, समान विचार, प्रेम एवं सामंजस्य का संदेश दिया गया है। यही सिद्धान्त परिवार, समाज तथा मानवीय सम्बन्धों में सौहार्द स्थापित करने में सहायक माने जाते हैं।

6. उपाय विज्ञान : कर्मों का सुधार

भारतीय ज्योतिष की एक और अनूठी विशेषता है 'उपाय' या निवारणात्मक उपाय। यह मान्यता है कि ग्रहों के अशुभ प्रभाव को शांत करने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं। ये उपाय रत्न धारण करने, मंत्र जप, दान, व्रत, यज्ञ आदि के रूप में हो सकते हैं।

"विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।

श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥[9]"

ऐसा कोई कार्य संसार में नहीं है जो उचित विधि (संविधान/मार्गदर्शन) के बिना किया गया हो। उचित मार्गदर्शन के बिना किया गया कार्य निष्फल ही रह जाता है।

उपायों का दार्शनिक आधार यह है कि वे हमारे कर्म में सकारात्मकता जोड़कर, ग्रहों द्वारा दिए जाने वाले दंड की तीव्रता को कम करते हैं। यह एक प्रकार का 'कॉस्मिक थेरेपी' या ब्रह्मांडीय चिकित्सा है।

7. आधुनिक युग में प्रासंगिकता

आज के तनावग्रस्त, अनिश्चितता से भरे युग में ज्योतिष की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर, यह व्यक्ति को आशा और मार्गदर्शन प्रदान करता है। व्यावसायिक जगत में, कई उद्योगपति बड़े निवेश और व्यावसायिक निर्णय लेने से पहले ज्योतिषीय सलाह लेते हैं। इस प्रकार, यह प्राचीन विद्या आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में एक सहायक उपकरण के रूप में कार्य कर रही है।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।[10]

सभी दिशाओं से हमारे पास कल्याणकारी विचार आएँ। यह मन्त्र आधुनिक युग में वैश्विक ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं उदार चिंतन की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आलोचनाएँ

निस्संदेह, ज्योतिष की वैज्ञानिकता पर प्रश्नचिह्न लगाए जाते हैं। आधुनिक विज्ञान के पास अभी तक ग्रहों की स्थिति और मानव जीवन के बीच सीधा संबंध सिद्ध करने के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

हालाँकि, ज्योतिष के समर्थक तर्क देते हैं कि जिस प्रकार गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत सदियों पहले भी कार्य कर रहा था, भले ही न्यूटन ने उसे बाद में खोजा, उसी प्रकार ग्रहों का सूक्ष्म प्रभाव भी एक सार्वभौमिक सत्य हो सकता है, जिसे समझने के लिए विज्ञान को अभी और विकसित होना है। ज्योतिष एक सांख्यिकीय और संभाव्यता-आधारित विज्ञान है, न कि निश्चिततावादी।

निष्कर्ष

भारतीय ज्योतिष एक गहन, दार्शनिक और व्यावहारिक विद्या है जिसका उद्देश्य मनुष्य को उसके जीवन-पथ पर प्रकाश डालना है। इसका स्वरूप अत्यंत विस्तृत है, जो गणित से लेकर मनोविज्ञान तक और खगोल विज्ञान से लेकर आध्यात्म तक फैला हुआ है। इसका महत्व केवल भविष्य देखने में नहीं, बल्कि वर्तमान को बेहतर ढंग से जीने, स्वयं को समझने, अपने कर्मों को सुधारने और जीवन के उतार-चढ़ाव के प्रति तैयार रहने में निहित है। यह एक ऐसा ज्ञान-समुद्र है जो व्यक्ति को भाग्य के भरोसे बैठने के स्थान पर, अपने कर्मों के प्रति सजग होकर एक सार्थक और सुखी जीवन जीने की कला सिखाता है। इसे अंधविश्वास न मानकर, एक मार्गदर्शक विज्ञान के रूप में स्वीकार करना ही इसकी सही उपयोगिता को सिद्ध करेगा।

""न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥[10]

ज्योतिष (ग्रह-नक्षत्र) अंधकार से परे है, क्योंकि अंधकार के विपरीत प्रकाश है। वह (परमात्मा) प्रकाशों का भी प्रकाश है, सभी कर्मों का स्रोत है। इस प्रकार, भारतीय ज्योतिष का चरम लक्ष्य केवल भौतिक सुख-दुःख का विश्लेषण करना नहीं, बल्कि उस परम ज्योति (ईश्वर/चेतना) की ओर ले जाना है, जो समस्त ज्योतियों (ग्रह-नक्षत्रों) का भी आधार है।

संदर्भ-सूची

1. मुंडक उपनिषद् (1.1.5)
2. ऋग्वेद शाखा श्लोक 1
3. ऋग्वेदाङ्ग ज्योतिष, श्लोक 6
4. बृहत् पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 1
5. वेदाङ्गज्योतिषम् 6
6. भगवद्गीता 5.15
7. भगवद्गीता 17.20
8. ऋग्वेद 10.191.2
9. भगवद्गीता 17.13
10. कठोपनिषद 2.2.15